PASSWORD
हिंदी
समाचार पत्रक
ज्ञान दीपिका
हिंदी भाषा, साहित्य और समसामयिक विषयों के लिए एक त्रैमासिक

आधुनिक शिक्षण पद्धती में खेल विधि की अनिवार्यता

आधुनिक समस्त शिक्षण पद्धतियों में खेल को शिक्षा का आधार माना गया है क्योंकि खेल के माध्यम से शिक्षा सहजभाव एवं प्रभावशाली तरीके से प्रदान की जा सकती है। खेल विधि में बालकों को न तो शिक्षक का भय होता है और न ही उन पर पुस्तकों का बोझ रहता है। बालक खेल एवं क्रियाशीलता के द्वारा प्रभावशाली ढंग से शिक्षा ग्रहण करते हैं। जो बालकों की भावनाओं प्रवृत्तियों एवं संवेगों के अनुकूल होती है इससे बालकों का मानसिक और शारीरिक दोनों ही प्रकार का विकास समुचित ढंग से होता है।

खेल विधि के द्वारा भाषा का शिक्षण उत्तम हो जायेगा। नाटक, शब्द प्रतियोगिताएँ, अन्त्याक्षरी, वर्तनी सम्बन्धी प्रतियोगिताएँ इत्यादि खेल पद्धति के अन्तर्गत आते हैं। इनके द्वारा बालकों को भाषा का ज्ञान ठोस रूप में प्रदान किया जा सकता है।

साहित्यिक क्रियाए, बाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन करना, कवि सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन करना, विद्यालय की पत्रिका प्रकाशित करना आदि।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, स्काउटिंग गाइडिंग, छात्र स्वशासन, पर्यटन, एन. सी. सी. एन. एस. एस., विद्यालयी उत्सव, नाटक, संगठित खेल, कृत्रिम संसद का निर्माण, रचना सम्बन्धी प्रतियोगताएँ आदि।

विभिन्न प्रगतिशील शिक्षण पद्धतियों के खेल कक्षा के भीतर खेले जाने वाले खेल-(फ्लैशकार्ड), अक्षर ज्ञान का खेल, शुद्ध वाचन का खेल, व्याकरण शुद्ध करने की प्रतियोगिता, अक्षर रचना की प्रतियोगिता, पर्यायवाची शब्द, विपरीत शब्द, निरर्थक-सार्थक शब्द, चित्रों के माध्यम से भावों का स्पष्टीकरण, कक्षा को दो भागों में विभक्त करके तुलनात्मक साहित्यिक कार्यक्रम इत्यादि का आयोजन।

खेल विधि सभी स्तर के बालकों को भाषा शिक्षण के लिए उत्तम एवं उपयोगी है। मौखिक भाषा अधिगम हेतु खेल विधि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। खेल के द्वारा अभिव्यक्ति होती है जो वाद विवाद आदि विधियों में सहायक होती है। लेकिन यह बात सदैव ध्यान रखने योग्य है कि यह विधि शिक्षा के ऊपर अपना आधिपत्य स्थापित कर अधिनायक का स्वरूप न धारण कर लें अन्यथा खेल प्रधान हो जायेगा और शिक्षा गौण।



कक्षा में खेलों की एक बड़ी शक्ति यह है कि छात्र कारण और प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, और यह महसूस करते हैं कि कार्यों के परिणाम होते हैं।

तिथियाँ याद रखें



31 जुलाई प्रेमचंद की जयंती

31 जुलाई को हिंदी के महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद की जयंती (जन्म: *31* जुलाई *1880*) है। उन्हें उनकी यथार्थवादी कहानियों और उपन्यासों के लिए 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है।



15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त *1947* को भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। यह दिन भारत के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण है जो देश की एकता, संप्रभुता और अमर शहीदों के बलिदानों को याद करने का प्रतीक है।

हिंदी की लिपि देवनागरी की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ

डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार सर्वप्रथम देवनागरी लिपि का प्रयोग गुजरात के नरेश जयभट्ट (700-800 ई.) के शिलालेख में मिलता है। आठवीं शताब्दी में चित्रकूट, नवीं में बड़ौदा के ध्रुवराज भी अपने राज्यादेशों में इस लिपि का उपयोग करते थे। समूचे विश्व में प्रयुक्त होने वाली लिपियों में देवनागरी लिपि की विशेषता सबसे भिन्न है। अगर हम रोमन, उर्दू लिपि से इसका तुलनात्मक अध्ययन करें तो देवनागरी लिपि इन लिपियों से अधिक वैज्ञानिक है।



लिपि चिह्नों के नाम ध्वनि के अनुसार

इस लिपि में चिह्नों के द्योतक उसके ध्वनि के अनुसार ही होते हैं और इनका नाम भी उसी के अनुसार होता है जैसे- अ, आ, ओ, औ, क, ख आदि। किंतु रोमन लिपि चिह्न नाम में आई किसी भी ध्वनि का कार्य करती है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि रोमन लिपि वर्णात्मक है और देवनागरी ध्वन्यात्मक।



लिपि चिह्नों की अधिकता

विश्व के किसी भी लिपि में इतने लिपि प्रतीक नहीं हैं। अंग्रेजी में ध्वनियाँ 40 के ऊपर है किंतु केवल 26 लिपि-चिह्नों से काम होता है। ब्राह्मी से उत्पन्न होने वाली अन्य कई भारतीय भाषाओं में लिपियों की संख्याओं की कमी नहीं है। निष्कर्षतः लिपि चिह्नों की पर्याप्तता की दृष्टि से देवनागरी, रोमन और उर्दू से अधिक सम्पन्न हैं।



स्वरों के लिए स्वतंत्र चिह्न

देवनागरी में ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के लिए अलग-अलग चिह्न उपलब्ध हैं और रोमन में एक ही (।) अक्षर से 'अ' और 'आ' दो स्वरों को दिखाया जाता है। देवनागरी के स्वरों में अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। देवनागरी लिपि मानव मन की अभिव्यक्ति को शब्दों में ढालने की क्षमता रखती है। यह अर्थपूर्ण शब्दावली और आध्यात्मिक विचारों के सटीक संप्रेषण का माध्यम बनती है।



व्यंजनों की आक्षरिकता

इस लिपि के हर व्यंजन के साथ-साथ एक स्वर 'अ' का योग रहता है, जैसे- च्+अ=च। इस तरह किसी भी लिपि के अक्षर को तोड़ना आक्षरिकता कहलाता है। इस लिपि का यह एक अवगुण भी है किंतु स्थान कम घेरने की दृष्टि से यह विशेषता भी है, जैसे- देवनागरी लिपि में 'कमल' तीन वर्णों के संयोग से लिखा जाता है, जबकि रोमन में छः वर्णों का प्रयोग किया जाता है!

सुपाठन एवं लेखन की दृष्टि- किसी भी लिपि के लिए अत्यन्त आवश्यक गुण होता है कि उसे आसानी से पढ़ा और लिखा जा सके इस दृष्टि से देवनागरी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। उर्दू की तरह नहीं, जिसमें जूता को जोता, जौता आदि कई रूपों में पढ़ने की गलती अक्सर लोग करते हैं।

हिंदी का नया विशिष्ट व्यंजन

अगस्त 2024 में भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिंदी वर्णमाला में संशोधन करते हुए ळ को विशिष्ट व्यंजन के रूप में शामिल किया है। अपनी हिन्दी में अब कुल वर्णों की संख्या 52 से बढ़कर 53 हो गई है। ळ वर्ण का प्रयोग हिंदी की प्रमुख बोलियों यथा हरियाणवी, मारवाड़ी, गढ़वाली, कुमाऊँनी के अतिरिक्त देवनागरी का प्रयोग करने वाली मराठी जैसी समृद्ध भाषाओं में भी है। इसके अतिरिक्त देवनागरीतर लिपियों वाली भारतीय भाषाओं यथा तमि ळ, तेलुगु, मलयाळम, कन्नड़ और ओड़िआ में भी ळ ध्वनि का व्यापक प्रयोग है। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं (व्यक्ति, स्थान, भू-आकृतियों के नामों में) में इनके प्रयोग किए जाने का अवकाश अपेक्षित है। अतः वर्णमाला में विशिष्ट व्यंजन के रूप में ळ वर्ण को स्थान दिया गया है।



31 जुलाई हिंदी के अमर कथाकार, कलम का सिपाही मुंशी प्रेमचंद जयंती

उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

कहानी : संग्रह : सप्तसरोज, नवनिधि, समरयात्रा, मानसरोवर (आठ खंडों में प्रकाशित)।

चर्चित कहानियाँ:

दो बैलों की कथा, ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, पूस की रात, कफ़न, बूढ़ी काकी, पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोग़ा, कर्मों का फल, बलिदान, शतरंज के खिलाड़ी।

नाटक : संग्राम, कर्बला, बलिदान।

बाल-साहित्य: रामकथा, कुत्ते की कहानी, मनमोदक।

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गांव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचंद के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थी। प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। जब उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरम्भ किया, तब उन्होंने नवाब राय नाम अपनाया। बहुत से मित्र उन्हें जीवन-पर्यन्त नवाब के नाम से ही सम्बोधित करते रहे। जब सरकार ने उनका पहला कहानी-संग्रह, 'सोजे वतन' जब्त किया, तब उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। बाद का उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुआ।



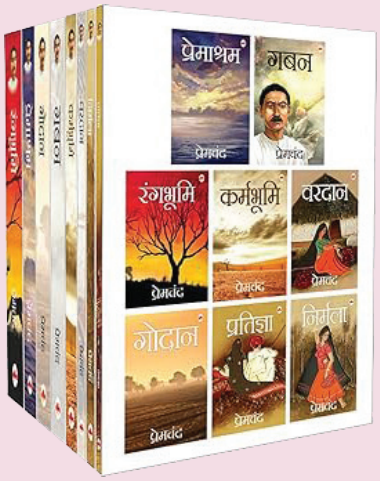

स्वतंत्रता दिन पर गाने के लिए श्री गिरिजाकुमार माथुर की अनुपम कविता पंद्रह अगस्त।

पन्द्रह अगस्त

आज जीत की रात
पहरुए! सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना

प्रथम चरण है नए स्वर्ग का
है मंज़िल का छोर
इस जनमंथन से उठ आई
पहली रत्न-हिलोर
अभी शेष है पूरी बेला
जीवन-मुक्ता-डोर
क्योंकि नहीं मिट पाई दुख की
विगत साँवली कोर
ले युग की पतवार
बने अम्बुधि समान रहना।

विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग-बंदिनी हवाएँ
प्रश्नचिह्न बन खड़ी हो गईं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफ़ान, इन्दु! तुम
दीप्तिमान रहना।

ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से है मृत समाज
कमज़ोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई ज़िन्दगी
यह विश्वास अमर है
जन-गंगा में ज्वार,
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए! सावधान रहना।

गिरिजाकुमार माथुर



तार सप्तक' के कवि गिरिजाकुमार माथुर का जन्म 22 अगस्त 1919 को मध्य प्रदेश के अशोक नगर में हुआ। उनमें कविता का बीज उनके पिता देवीचरण माथुर से पड़ा जो स्वयं कवित्त, सवैयाँ और दोहे लिखते थे।

आपके विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस पर प्रस्तुति के लिए एक सरल भाषण

आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय/महोदया, शिक्षकगण एवं प्रिय मित्रों, आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

सन् 1947 में इसी दिन हमारा देश ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त हुआ था। यह विजय अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस, संघर्ष और बलिदान के कारण संभव हो सकी। यह स्वतंत्रता हमें अचानक नहीं मिली; यह महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस जैसे महान नेताओं तथा लाखों देशभक्तों के त्याग और बलिदान का परिणाम है।



लेकिन स्वतंत्रता के साथ-साथ जिम्मेदारियाँ भी आती हैं। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना, एक-दूसरे का सम्मान करना तथा अपने राष्ट्र के विकास में सकारात्मक योगदान देना हमारा कर्तव्य है।

आइए, हम एक स्वच्छ, सशक्त और समावेशी भारत के निर्माण के लिए कार्य करने का संकल्प लें।

जय हिंद!

फुटबॉल विश्व कप का इतिहास

ओलंपिक से शुरू हुई यात्रा, जूल्स रिमेट के सपने से बना विश्व कप 1930 से हर चार साल में दुनिया का सबसे बड़ा फुटबॉल महोत्सव।

ओलंपिक से शुरुआत

1900 में पेरिस में हुए ओलंपिक खेलों में फुटबॉल की शुरुआत हुई और 1904 में फीफा की स्थापना हुई। 1920 के ओलंपिक खेलों में भविष्य के फीफा अध्यक्ष जूल्स रिमेट, जिन्हें 'विश्व कप का जनक' कहा जाने लगा, ने इस खेल के लिए एक अलग अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट का प्रस्ताव रखा। रिमेट के इस विचार के साकार होने से पहले, फुटबॉल मुख्य रूप से एक ओलंपिक खेल था।

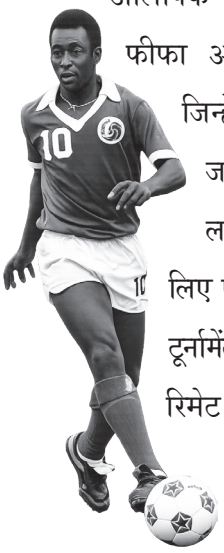



पहला फीफा विश्व कप: उरुग्वे 1930

1930 में पहला फीफा विश्व कप उरुग्वे में आयोजित हुआ। इसमें 13 टीमों ने जीत के लिए प्रतिस्पर्धा की। मेजबान देश उरुग्वे ने 30 जुलाई, 1930 को आयोजित पहले विश्व कप फाइनल में अर्जेंटीना को 4–2 से हराया।

1932 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक में शामिल नहीं किया गया

पहले विश्व कप टूर्नामेंट के कारण फुटबॉल को 1932 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक में शामिल नहीं किया गया था। हालांकि, यह खेल 1936 में ओलंपिक प्रतियोगिता में वापस आया और तब से इसका एक अभिन्न अंग बना रहा।

अमैच्योर नियमों की पाबंदी

फीफा और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा खिलाड़ियों की पात्रता पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण पेशेवर खिलाड़ियों को 1984 तक ओलंपिक खेलों में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

फीफा विश्व कप का नियमित आयोजन

फीफा 1930 से कुछ अपवादों को छोड़कर हर चार साल में विश्व कप का आयोजन करता आ रहा है। आज यह टूर्नामेंट दुनिया का सबसे लोकप्रिय और प्रतिष्ठित फुटबॉल महोत्सव माना जाता है।

वाला प्रत्यय का प्रयोग

क्रिया रूपों में 'करने वाला', 'आने वाला', 'बोलने वाला' आदि को अलग लिखा जाए, जैसे-मैं घर जाने वाला हूँ, जाने वाले लोग।

संज्ञा और विशेषण के योजक प्रत्यय के रूप में 'घरवाला', 'टोपीवाला' (टोपी बेचने वाला), दिलवाला, दूधवाला आदि एक शब्द के समान ही लिखे जाएँगे। 'वाला' जब प्रत्यय के रूप में आएगा तब मिलाकर लिखा जाएगा, अन्यथा अलग से। यह वाला, यह वाली, पहले वाला, अच्छा वाला, लाल वाला, कल वाली बात आदि में 'वाला' निर्देशक शब्द है। अतः इसे अलग से ही लिखा जाए। इसी तरह लंबे बालों वाली लड़की, दाढ़ी वाला आदमी आदि शब्दों में भी 'वाला' अलग लिखा जाएगा। इससे हम रचना के स्तर पर अंतर कर सकते हैं। जैसे-गाँववाला (ग्रामीण) गाँव वाला मकान (गाँव का मकान)